By:- Sujata Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

B.A History
Deg-I (Sub)

वैदिक सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
(The Main features of vedic civilization)

खाद्य पदार्थ:- चावल, जौ, घी, दूध, मांस ऋग्वैदिक आर्यों का मुख्य भोजन था। अनाज को भून अथवा पीसकर वे उसे घी दूध के साथ खाया करते थे। फल तथा तरकारी का ये लोग बहुत अधिक प्रयोग करते थे। पशुओं को बलि दी जाती थी जिनका मांस ये लोग खाया करते थे।

पेय पदार्थ:- ऋग्वैदिक आर्य दो प्रकार के पेय पदार्थ प्रयोग करते थे। एक को सोम कहते थे और दूसरे को सुरा। सोम एक वृक्ष के रस से बनाया जाता था जिसमें मादकता नहीं रहती थी। यज्ञ के अवसरों पर इसका प्रयोग किया जाता था। सुरा में मादकता होती थी और यह अन्न से बनाई जाती थी। सुरापान घृणित समझा जाता था और कहीं तो सुरापान अपराध भी बतलाया गया है। ब्राह्मणलोग इसे और घृणा की दृष्टि से देखते थे।

शिक्षा:- इस काल में शिक्षा मौखिक होती थी अतएव स्मरण शक्ति का बहुत बड़ा महत्व था। गुरु लोग वेद मंत्रों को पढ़ाते थे और विद्यार्थी उन्हें कण्ठाग्र करने का प्रयत्न करते थे। शिक्षा का उद्देश्य बुद्धि को बढ़ाना तथा आचरण को शुद्ध बनाना होता था।

वर्ण व्यवस्था:- जब आर्य लोग अनार्यों के सम्पर्क में आये तब वर्ण अथवा रंग के आधार पर दो जातियाँ बन गई। जो लोग गौर वर्ण के थे वे आर्य

और जो काले रंग के थे वे अनार्य कहलाये। आर्य लोग स्वेम अपने-अपने कार्यानुसार कई वर्ण में विभक्त हो गये। इस प्रकार पढ़ने तथा यज्ञ का कार्य करनेवाले ब्राह्मण युद्ध और शासन करनेवाले क्षत्रिय अथवा राजन्य, कृषि तथा व्यापार करनेवाले वैश्य और सेवा कार्य करनेवाले शूद्र कहलाये। पुरुष सूक्त में लिखा है कि ब्राह्मण लोग आदि पुरुष के मुख से, क्षत्रिय उनकी भुजाओं से, वैश्य उनकी जंघा से तथा शूद्र उनके चरणों से निकले हैं। इस प्रकार वर्णों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। परन्तु यह व्यवस्था व्यवसाय पर आधारित थी और इसमें जटिलता न थी।

आश्रम व्यवस्था :- आश्रम व्यवस्था भी इस काल में स्थापित हो चुकी थी जिसके अनुसार जीवन के चार भाग किये गये थे अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यासी। इन आश्रमों का पालन केवल प्रथम तीन वर्णों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को ही करना पड़ता था।

आर्थिक दशा

ऋग्वैदिक आर्यों के आर्थिक जीवन का परिचय प्राप्त करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों पर विचार करना होगा—

गाँव की व्यवस्था :- ऋग्वैदिक आर्य गाँव में रहते थे, नगरों का ऋग्वेद में कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। गाँव पास-पास होते थे। सुरक्षा के लिए प्रत्येक घर झाड़ियों अथवा अन्य किसी चीज से घिरा रहता था।